आरती सोमवार की

आरती करत जनक कर जोरे,
बड़े भाग्य रामजी आये मोरे । टेक ।
जीत स्वयंवर धनुष चढ़ाए,
सब भूपन के गर्व मिटाये ।
तोरि पिनाक किए हुई खण्डा,
रघुकुल हर्ष रावण भय शंका ।
आई है सीता संग सहेली,
हरषि निरखि वर माला फेरी ।
गज मोतियन के चौक पुराए,
कनक कलश भरी मंगल गाए ।
कंचन थार कपूर की बाती,
सुर नर मुनिजन आए बराती ।
फिरती भांवरे बाजा बाजे,
सिया सहित रघुवीर विराजे ।
धनि धनि राम लखन दोउ भाई,
धनि दशरथ कौशल्या माई ।
राजा दशरथ जनक विदेही,
भरत शत्रुघन परम सनेही ।
मिथिलापुर में बजत बधाई,
दास मुरारी स्वामी आरती गाई ।

विवरण

राजा जनक हाथ जोड़कर श्री राम जी की आरती कर रहे हैं तथा अपने आप को, राम जी के आने से बड़ा ही भाग्यवान समझ रहे हैं । श्री राम जी धनुष चढ़ाकर, उस सीता स्वयंवर में विजयी हुए तथा सभी राजाओं के बल के घमंड को चूर कर दिया ।

इनके हाथों का स्पर्श पाते ही धनुष के टुकड़े हो गये, जिससे रघुकुल के लोगों के मन की आनंद की सीमा न रही, परन्तु रावण बहुत ही भयभीत हुआ ।

सीता अपने सहेलियों के साथ आकर हर्षित मन से श्री राम जी को निहारते हुए वरमाला डाल रही हैं । मोतियों के मंगल चौक पुराये हैं तथा सखियाँ मंगल गाते हुए सोने के कलश में जल भर रहीं हैं । श्री सीता जी भांवरे घूम रहीं हैं एवं बाजे बज रहें हैं तथा सीता जी के साथ श्री राम जी विराज रहें हैं ।

राम एवं लक्ष्मण दोनो भाई धन्य हुए तथा राजा दशरथ एवं कौशल्या माता भी धन्य हुईं । राजा दशरथ एवं जनक भी धन्य हुए तथा श्री राम जी के परम स्नेही भरत एवं शत्रुघ्न भी धन्य हुए । मिथिलापुर में बधाई बजने लगी । इस आरती को दास मुरारी गाते हैं ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.